

लैंगिक हिसा और पतिसत्तात्मक समाज

चर्चा में क्यों?

अभी हाल ही में 31 दिसंबर की रात को जब संपूर्ण भारत नववर्ष के शुभागमन पर जश्न में डूबा था, तब आईटी सट्टी बेंगलुरु में घटी छेड़छाड़ की शर्मनाक घटना सुर्खियों में आई।

लैंगिक हिसा के दो वर्ग-शोषक एवं शोषित

- लैंगिक हिसा की घटना के बाद भी समाज में प्रतिक्रिया देने वालों के दो वर्ग हो जाते हैं। पहला, शोषित के पक्ष में और दूसरा, शोषक के पक्ष में।
- कुछ लोग तो हमेशा की तरह ऐसी घटनाओं के लिये पूरी तरह लड़कियों के कपड़े, उनके अकेले घूमने, देर रात तक पार्टी करने आदि को दोष देते हैं, जबकि इस तरह की घटनाएँ सरेआम भी होती हैं।
- राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार सबसे ज्यादा लैंगिक हिसा घरों के भीतर होती हैं। हिसा करने वालों (शोषक) में अधिकतर महिला के रशितेदार, पति, दोस्त, सहकर्मी, पड़ोसी, नौकर एवं अजनबी होते हैं।
- घटना के प्रत्यक्षदर्शी यदि मनोरंजन की नजर से इन घटनाओं को नहीं देख रहे तो वे प्रतिक्रिया की भावना से भी तो शून्य हैं। ये तटस्थ दर्शक ऐसी घटनाओं के लिये बराबर के ज़िम्मेदार हैं।
- ऐसी घटनाओं की पीड़िता केवल वह अकेली महिला नहीं होती, बल्कि वे तमाम लड़कियाँ और महिलाएँ भी होती हैं जो हमेशा अनहोनी के भय में जीती हैं।
- ऐसी घटनाओं के बाद पीड़िता का परिवार और भाई-बहन भी शोषित व अवसाद का जीवन जीते हैं। कई बार तो पीड़िता को लेकर कहीं अनजान स्थान पर जाने के लिये भी वविश हो जाते हैं।

हिसा का स्तर

- एक स्त्री गर्भावस्था से लेकर मृत्यु तक तमाम यातनाओं, शोषण एवं हिसा से गुजरती है। इसमें हिसा का स्तर अवांछित स्पर्श, पीछा करने से लेकर सामूहिक बलात्कार, जननांग छद्मिरीकरण व ब्रेस्ट आयरनगि तक हो सकता है।
- समाज में प्रचलित धर्म, जाति, संस्कृति और संस्कार की ओट में स्त्री उत्पीड़न की ऐसी घटनाएँ भी होती हैं, जो समाज में सामान्यीकृत रूप से स्वीकृत हैं। जो हमें सोचने पर वविश भी नहीं करती! जैसे- पर्दा करना, पर-पुरुष से बातें न करना, अपना सब कुछ छोड़ सदा के लिये पराये घर चली जाना।

हिसा का स्वरूप

- वैसे तो हर हिसा हिसा ही है, कति भारत जैसे पतिसत्तात्मक समाज में हिसा के स्वरूप में थोड़ी भिन्नता है। जैसे- कन्या भ्रूण हत्या, बालिका यौन शोषण, बेटा-बेटी में दोगम व्यवहार, दहेज उत्पीड़न, असुरक्षित गर्भपात, घरेलू हिसा, तीन तलाक, बहु-विविह, कार्यस्थल पर यौन शोषण, मानसिक एवं भावनात्मक शोषण, यौन उत्पीड़न और तस्करी, अनैतिक देह व्यापार, ऑनर कलिगि, गैंगरेप, अपहरण, एसडि अटैक, डेटगि दुरुपयोग, पत्नी से बलात्कार, जबरन वेश्यावृत्त व पोर्नोग्राफी, ब्लैकमेल आदि।
- वही चीन में संस्कृतिके नाम पर पाँव बंध्याकरण (foot binding) होता है तो अफ्रीका सहित कई देशों में महिला जननांग छद्मिरीकरण (खतना) एवं ब्रेस्ट आयरनगि जैसी भयावह प्रथा प्रचलित है।
- यद्यपि जैविक रूप से स्त्रियों में कोमलता व सरलता की प्रकृति विद्यमान है, फिर भी ज्यादातर महिलाओं के वस्त्र, प्रसाधन, व्यवहार, परंपराएँ इस तरह से उन्हें परभाषित कर देती हैं कि वे जोखिम के कार्यों में असहज हो जाती हैं।

महिलाओं के वरिद्ध हिसा के कारण

- वैसे तो हिसा के कई अलग-अलग कारण हैं, कति हिसा का एक प्रमुख कारण पतिसत्तात्मक मानसिकता का हावी होना है।
- हिसा का एक कारण स्त्री व पुरुष के मध्य अहं का टकराव भी होता है। स्त्री की आय या ज्ञान का स्तर पुरुष से अधिक हो तो भी वहाँ हिसा का खतरा रहता है।
- महिलाओं को घर की इज्जत व प्रतियोगिता का प्रतीक माना जाता है। अतः उन पर अतिरिक्त प्रतियोगिता लगा दिया जाता है।
- परिवार में भी जब बचपन से ही घर में या आस-पास महिलाओं के साथ हो रहे दोगम भाव को कोई बच्चा देखता है तो वह वही सीखता है।
- कुछ सामाजिक परंपराएँ, जैसे- दहेज प्रथा, तीन तलाक, बाल विवाह, बहुविवाह आदि भी महिलाओं के शोषण को उत्प्रेरित करती हैं।
- अपनी इज्जत (साख) के नाम पर भारत समेत कई देशों में ऑनर कलिगि की घटनाएँ होती हैं।
- टेलीविजन, सनिमा, हसिक, मादक पदार्थ (शराब आदि) एवं खुलापन भी लैंगिक हिसा व संघर्ष को जन्म देता है।

क्या किया जाना चाहिये?

- सर्वप्रथम महिलाओं में शिक्षा के स्तर को बढ़ावा देना चाहिये क्योंकि केवल वविक से ही मानसकि व सांस्कृतकि आधपित्य की जकड़न से बाहर आया जा सकता है। रोज़गार के अनुकूल शकिषण, प्रशकिषण प्राप्त कर आर्थकि सशक्तीकरण पर जोर देना चाहिये।
- लोक सभा एवं वधिान सभा में प्रस्तावति 33 प्रतशित महिला आरक्षण को मूरत रूप देना चाहिये। परिवार व समाज में एवं कार्यस्थल पर लैंगकि समानता के प्रतजिागरूकता व सहभागति बढ़ानी चाहिये।
- शराब पर पूरण प्रतबिंध के साथ-साथ टेलीवजिन, मीडिया व सोशल नेटवर्कगि साइटों पर आपत्तजिनक एवं भड़काऊ सामग्री के प्रसारण से बचना चाहिये। महिला शोषण एवं हसिा से संबंघति मामलों की फास्ट ट्रायल कोर्ट में सुनवाई करनी चाहिये।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/sexual-violence-and-patriarchal-society>

